Swami Vivekananda Advanced Journal for Research and Studies
Online Copy of Document Available on: www.svajrs.com

ISSN:2584-105X **Pg. 75-79**

दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद: भारतीय संस्कृति में मानवता की पुनर्परिभाषा

गुरू प्रसाद राठौर
शोधार्थी
राजनीति विज्ञान, महर्षि स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज
महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, लखनऊ

Accepted: 30/10/2025
Published: 05/11/2025 ***DOI: http://doi.org/10.5281/zenodo.17529930***

शोध सारांश

यह शोध पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद (Integral Humanism) का भारतीय संस्कृति और समकालीन समाज में महत्व को विश्लेषित करता है। एकात्म मानववाद केवल राजनीतिक या आर्थिक दर्शन नहीं, बल्कि व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करने वाला एक समग्र जीवन-दर्शन है। उपाध्याय ने इस दर्शन में भारतीय संस्कृति की आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक मूल्यों को केंद्र में रखा और पश्चिमी मानवतावाद की सीमाओं को रेखांकित किया। यह शोध उपाध्याय के जीवन, वैचारिक पृष्ठभूमि और उनकी प्रमुख कृतियों के माध्यम से उनकी विचारधारा का मूल्यांकन करता है।

शोध में उपाध्याय के सिद्धांतों को सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के संतुलन, और समष्टि-पुरुष की अवधारणा के परिप्रेक्ष्य में समझाया गया है। इसके अलावा, शोध समकालीन भारत में उनके विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है, जैसे सतत विकास, मानव कल्याण, और नीति निर्माण में उनकी दर्शनशैली का योगदान। शोध आलोचनात्मक दृष्टि से उपाध्याय के दर्शन की सीमाओं, पश्चिमी मानवतावाद और गांधी, टैगोर जैसे अन्य भारतीय विचारकों से तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करता है।

अंततः, यह अध्ययन दर्शाता है कि एकात्म मानववाद भारतीय मानवतावादी परंपरा की आधुनिक पुनर्परिभाषा है, जो व्यक्ति और समाज, भौतिक और आध्यात्मिक, राष्ट्र और मानवता के बीच संतुलन स्थापित करता है। यह दर्शन न केवल अकादमिक मूल्य रखता है, बल्कि भारत के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास में मार्गदर्शक भी है।

1. **प्रस्तावना**

भारतीय राजनीति और दर्शन के इतिहास में पंडित दीनदयाल उपाध्याय का नाम उस विचारक के रूप में स्मरणीय है जिन्होंने "एकात्म मानववाद" (Integral Humanism) के माध्यम से भारतीय समाज, संस्कृति और राजनीति को एक समग्र वैचारिक दृष्टि प्रदान की। उन्होंने पश्चिमी राजनीतिक विचारधाराओं जैसे पूँजीवाद और समाजवाद दोनों को अधूरा माना और एक ऐसे भारतीय मॉडल की आवश्यकता पर बल दिया जो मानव की समग्रता — शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा — को साथ लेकर चले **(Upadhyaya, 1965)**। उनके अनुसार मानव केवल आर्थिक या राजनीतिक प्राणी नहीं है, बल्कि वह आध्यात्मिक चेतना से युक्त एक संपूर्ण अस्तित्व है। इस दृष्टिकोण ने आधुनिक भारत में मानवता की एक नई पुनर्परिभाषा प्रस्तुत की।

उपाध्याय का एकात्म मानववाद भारतीय संस्कृति के मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित है, जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' जैसे आदर्शों में निहित हैं **(Rao, 2018)**। उन्होंने कहा कि पश्चिमी आधुनिकता ने व्यक्ति को समाज से अलग कर दिया है, जबकि भारतीय परंपरा व्यक्ति और समाज दोनों को एकात्म मानती है। इसीलिए उनके अनुसार मानवता का वास्तविक अर्थ तब ही संभव है जब व्यक्ति, समाज, प्रकृति और परमात्मा में संतुलन स्थापित हो **(Sharma, 2020)**। यह विचारधारा भारतीय सांस्कृतिक परंपरा की उस जीवन-दृष्टि का विस्तार है जिसमें आध्यात्मिकता और भौतिकता में कोई विरोध नहीं, बल्कि परस्पर पूरकता है।

उपाध्याय का मानना था कि आधुनिक विश्व की प्रमुख समस्या मानव के विखंडन की है — जहाँ व्यक्ति की पहचान केवल आर्थिक उपभोग या वर्ग-संघर्ष के आधार पर की जाती है **(Chaturvedi, 2017)**। इसके विपरीत उन्होंने एकात्म मानववाद के माध्यम से यह प्रतिपादित किया कि मानवता का मापदंड केवल भौतिक सुख नहीं, बल्कि आत्मिक संतुलन और नैतिक मूल्य हैं। उनके विचार में भारतीय संस्कृति में धर्म कोई संकीर्ण आस्था नहीं, बल्कि समाज और व्यक्ति के बीच संतुलन बनाए रखने का शाश्वत सिद्धांत है **(Upadhyaya, 1965; Kumar, 2019)**।

एकात्म मानववाद के माध्यम से उपाध्याय ने मानवता की ऐसी पुनर्परिभाषा प्रस्तुत की जो न तो पश्चिमी उदारवाद की तरह व्यक्तिवादी है, न ही मार्क्सवाद की तरह भौतिकतावादी। यह एक ऐसी समावेशी दृष्टि है जो मनुष्य को समाज, प्रकृति और परमात्मा के साथ एक अविभाज्य एकता में देखती है। इस विचारधारा की प्रासंगिकता आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में और अधिक बढ़ गई है, जहाँ सामाजिक असमानता, पर्यावरण संकट और नैतिक मूल्यों का ह्रास जैसे मुद्दे गहराते जा रहे हैं **(Singh, 2022)**। अतः दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद भारतीय संस्कृति में मानवता की पुनर्परिभाषा का एक सशक्त वैचारिक उपकरण बनकर उभरता है, जो वर्तमान मानवता को दिशा प्रदान करता है।

उपाध्याय का "एकात्म मानववाद" (Integral Humanism) केवल एक राजनीतिक दर्शन नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति में निहित जीवन-दर्शन का पुनराविष्कार है। यह विचार व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और प्रकृति — चारों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है **(Upadhyaya, 1965)**।

एकात्म मानववाद की अवधारणा 1965 में उपाध्याय द्वारा भारतीय जनसंघ की कार्यसमिति के चार व्याख्यानों में प्रस्तुत की गई थी। इसमें उन्होंने पाश्चात्य विचारधाराओं—पूंजीवाद, समाजवाद और साम्यवाद—की सीमाओं को रेखांकित करते हुए भारतीय दृष्टि पर आधारित एक वैकल्पिक मॉडल दिया (Verma, 2020)। उनका कहना था कि किसी भी समाज की प्रगति तभी संभव है जब वह अपनी संस्कृति और परंपरा के अनुरूप विकास का मार्ग चुने। यही कारण है कि उनका मानववाद भारतीयता में निहित आध्यात्मिकता, नैतिकता और समरसता का पर्याय बन गया।

2. **दीनदयाल उपाध्याय का जीवन और वैचारिक पृष्ठभूमि**

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितंबर 1916 को मथुरा जिले के नगला चंद्रभान में हुआ। प्रारंभिक जीवन कठिनाइयों से भरा था, किंतु उन्होंने शिक्षा और आत्मचिंतन के माध्यम से एक गहन वैचारिक दृष्टि विकसित की **(Joshi, 2017)**। वे आरएसएस (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) से प्रारंभिक समय में ही जुड़ गए थे और आगे चलकर भारतीय जनसंघ के संस्थापक वैचारिक स्तंभ बने।

उपाध्याय पश्चिमी राजनीतिक विचारधाराओं से परिचित थे, परंतु वे मानते थे कि भारत की समस्याओं का समाधान भारतीय संस्कृति में ही निहित है **(Rao, 2019)**। गांधी, अरविंद और विवेकानंद जैसे चिंतकों की भांति, उन्होंने भी आध्यात्मिकता को समाज की प्रेरक शक्ति माना। उनके अनुसार, "पश्चिम का मानववाद केवल भौतिक सुखों की बात करता है, जबकि भारतीय मानववाद आत्मा की उन्नति के साथ-साथ समष्टि के कल्याण की भी चिंता करता है **(Upadhyaya, 1965, p. 27)**।

3. **एकात्म मानववाद का सिद्धांत**

एकात्म मानववाद उपाध्याय की विचार प्रणाली का केंद्र है। उन्होंने कहा कि मनुष्य केवल शरीर या मन नहीं, बल्कि शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समन्वित स्वरूप है **(Singh, 2016)**। पश्चिमी मानवतावाद जहाँ व्यक्ति को अलग-थलग इकाई के रूप में देखता है, वहीं उपाध्याय व्यक्ति को समाज और प्रकृति का अविभाज्य अंग मानते हैं।

उनके अनुसार, समाज एक जीवित इकाई है—"समष्टि-पुरुष" (collective being)—जिसमें प्रत्येक व्यक्ति एक कोशिका के समान है (Bhattacharya, 2015)। उन्होंने 'चार पुरुषार्थों'—धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष—के संतुलन को जीवन की पूर्णता के लिए आवश्यक बताया।

एकात्म मानववाद का मूल उद्देश्य मनुष्य के बहुआयामी विकास को सुनिश्चित करना है—भौतिक, मानसिक, बौद्धिक

और आध्यात्मिक सभी स्तरों पर। उन्होंने कहा, "अर्थ और काम का नियंत्रण धर्म द्वारा और इन सबका समन्वय मोक्ष के उद्देश्य से होना चाहिए" **(Upadhyaya, 1965, p. 42)**।

उपाध्याय का यह दृष्टिकोण आधुनिक युग में समग्र विकास (holistic development) की अवधारणा से मेल खाता है, जहाँ व्यक्ति और समाज दोनों की उन्नति एक-दूसरे पर निर्भर मानी जाती है।

4. **भारतीय संस्कृति में मानवता की पुनर्परिभाषा**

एकात्म मानववाद की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह मानवता को भारतीय सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में परिभाषित करता है। उपाध्याय ने कहा कि भारत में "मानव" केवल जैविक इकाई नहीं, बल्कि आत्मिक चेतना से युक्त जीव है **(Rao, 2019)**। पश्चिमी मानवतावाद जहां व्यक्ति-केंद्रित (individual-centric) है, वहीं भारतीय मानवतावाद समाज-केंद्रित (community-centric) है **(Sharma, 2018)**।

उन्होंने "सांस्कृतिक राष्ट्रवाद" (Cultural Nationalism) की अवधारणा दी, जिसके अनुसार राष्ट्र केवल भौगोलिक सीमा नहीं, बल्कि साझा संस्कृति और जीवन मूल्यों का समुदाय है **(Verma, 2020)**। उनके अनुसार, "भारतीय संस्कृति में राष्ट्र को माता के रूप में देखा गया है—यह भाव केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक है" **(Upadhyaya, 1965, p. 55)**।

इस प्रकार, उन्होंने मानवता की पुनर्परिभाषा इस रूप में की कि मनुष्य तभी पूर्ण है जब वह अपने अस्तित्व को समष्टि के साथ जोड़कर देखता है। यह विचार वसुधैव कुटुम्बकम् की भारतीय भावना को आधुनिक संदर्भ में पुनर्स्थापित करता है।

5. **समकालीन संदर्भ में एकात्म मानववाद**

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में जहाँ तकनीकी प्रगति, आर्थिक उदारीकरण और राजनीतिक बहुलता ने नई संभावनाएँ खोली हैं, वहीं सामाजिक असमानता, नैतिक शून्यता और पर्यावरणीय संकट जैसी चुनौतियाँ भी तेजी से उभर रही हैं। ऐसे में पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद (Integral Humanism) आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है। यह दर्शन केवल एक राजनीतिक विचार नहीं, बल्कि एक ऐसा मानवीय दृष्टिकोण है जो व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच संतुलित संबंध की वकालत करता है **(Upadhyaya, 1965; Sharma, 2020)**।

आधुनिक युग की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि विकास के नाम पर मनुष्य ने स्वयं से और प्रकृति से दूरी बना ली है। पूंजीवाद ने मनुष्य को उपभोक्ता बना दिया है, जबकि समाजवाद ने उसे केवल एक वर्ग-सदस्य के रूप में सीमित कर दिया **(Chaturvedi, 2017)**। उपाध्याय का एकात्म मानववाद इन दोनों दृष्टिकोणों का संतुलन प्रस्तुत करता है — वह न तो व्यक्तिवाद को पूर्ण मानता है और न ही सामूहिकता को सर्वोच्च। इसके बजाय वह मनुष्य को एक "संपूर्ण चेतना" के रूप में देखता है, जहाँ भौतिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक आयाम एक साथ विकसित होते हैं **(Kumar, 2019)**।

आज जब भारत "विकासशील" से "विकसित" राष्ट्र की ओर अग्रसर है, तब यह आवश्यक है कि विकास की प्रक्रिया केवल आर्थिक न होकर नैतिक और सांस्कृतिक विकास का भी वाहक बने। एकात्म मानववाद इसी दिशा में मार्गदर्शन देता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी कई अवसरों पर उपाध्याय के विचारों का उल्लेख करते हुए कहा है कि "सबका साथ, सबका विकास" का सिद्धांत एकात्म मानववाद की ही आधुनिक अभिव्यक्ति है **(Modi, 2018)**। इस प्रकार यह विचारधारा केवल सैद्धांतिक विमर्श नहीं, बल्कि नीति निर्माण की व्यवहारिक प्रेरणा बन चुकी है।

समकालीन भारत में पर्यावरणीय संकट, पारिवारिक विघटन, और युवाओं में बढ़ती भौतिक प्रवृत्तियाँ मानवता के सामने गंभीर प्रश्न खड़े करती हैं। उपाध्याय के अनुसार, इन समस्याओं का समाधान "धर्माधारित समाज" में है — ऐसा समाज जो किसी धार्मिक संकीर्णता पर नहीं, बल्कि नैतिकता, कर्तव्यबोध और समरसता पर आधारित हो **(Rao, 2018)**। उनका यह विचार आज की शिक्षा, राजनीति और अर्थव्यवस्था — सभी क्षेत्रों में मूल्याधारित दृष्टिकोण को पुनर्स्थापित करने का आह्वान करता है।

वैश्विक स्तर पर भी जब मानवाधिकार, जलवायु परिवर्तन और सामाजिक न्याय जैसे मुद्दों पर विमर्श हो रहा है, एकात्म मानववाद इन सभी प्रश्नों के लिए समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह न केवल भारतीय संस्कृति की आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि मानव सभ्यता को स्थायी और संतुलित विकास की दिशा दिखाता है **(Singh, 2022)**। इसीलिए समकालीन युग में एकात्म मानववाद केवल एक वैचारिक प्रतिमान नहीं, बल्कि एक जीवनदृष्टि है, जो आज के विखंडित विश्व में मानवता को पुनः एकात्मता की ओर ले जाने की क्षमता रखती है।

6. **आलोचनात्मक विश्लेषण**

दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद भारतीय चिंतन की उस विशिष्ट धारा का प्रतिनिधित्व करता है जो पश्चिमी विचारधाराओं से भिन्न होकर भारतीय समाज की आत्मा से संवाद करती है। यह दर्शन मानव जीवन के भौतिक, बौद्धिक, सामाजिक और आध्यात्मिक आयामों को एकात्म दृष्टि में देखने की प्रेरणा देता है **(Upadhyaya, 1965)**। फिर भी, समकालीन विद्वानों ने इसके कुछ पहलुओं पर आलोचनात्मक दृष्टि भी प्रस्तुत की है।

सबसे पहले, कुछ विचारकों का मत है कि एकात्म मानववाद में प्रयुक्त "धर्माधारित समाज" की अवधारणा अस्पष्ट है। आधुनिक धर्मनिरपेक्ष राज्य व्यवस्था में धर्म का यह व्यापक प्रयोग राजनीतिक और सामाजिक विविधता के संदर्भ में व्यावहारिक कठिनाइयाँ उत्पन्न कर सकता है **(Chaturvedi, 2017)**। इसके अतिरिक्त, यह दर्शन पश्चिमी विचारधाराओं की आलोचना तो करता है, परंतु

आधुनिक लोकतंत्र और वैश्विक मानवाधिकार विमर्श के साथ इसका सामंजस्य सीमित रूप में ही देखा गया है **(Kumar, 2019)**।

कुछ विद्वान इसे भारतीय राष्ट्रवाद की वैचारिक नींव मानते हैं, जो सांस्कृतिक एकता को प्राथमिकता देते हुए क्षेत्रीय, भाषाई और धार्मिक विविधताओं को पर्याप्त रूप से समाहित नहीं कर पाता **(Rao, 2018)**। वहीं दूसरी ओर, समर्थक इसे "समग्र विकास" की ऐसी दृष्टि मानते हैं जो केवल आर्थिक प्रगति नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक उत्कर्ष की भी वकालत करती है **(Sharma, 2020)**।

इस प्रकार, एकात्म मानववाद का सबसे बड़ा योगदान यह है कि उसने मानवता को पुनः केंद्र में स्थापित किया, परंतु इसकी चुनौतियाँ इस बात में हैं कि आधुनिक बहुलतावादी समाज में इसके सिद्धांतों को किस सीमा तक व्यवहारिक रूप में लागू किया जा सकता है। इसलिए, यह विचारधारा आज भी एक निरंतर संवाद और पुनर्व्याख्या की मांग करती है **(Singh, 2022)**।

7. निष्कर्ष

दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद भारतीय जीवन-दर्शन का एक समग्र और व्यावहारिक स्वरूप है, जो व्यक्ति, समाज, प्रकृति और परमात्मा के बीच एकता स्थापित करने का प्रयास करता है। यह दर्शन न केवल राजनीतिक विचारधारा है, बल्कि मानव जीवन के सभी पक्षों—भौतिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक—को संतुलित रूप से विकसित करने की प्रेरणा देता है **(Upadhyaya, 1965)**। उपाध्याय का यह विचार भारतीय संस्कृति की उस परंपरा को पुनर्स्थापित करता है जिसमें मनुष्य को ब्रह्मांड का अभिन्न अंग माना गया है और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना के माध्यम से सम्पूर्ण मानवता को एक परिवार के रूप में देखा गया है **(Rao, 2018)**।

समकालीन युग में जब विश्व अनेक प्रकार के संकटों—जैसे नैतिक अवसाद, आर्थिक असमानता, और पर्यावरणीय असंतुलन—से जूझ रहा है, तब एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ जाती है। यह विचार हमें बताता है कि विकास का उद्देश्य केवल भौतिक समृद्धि नहीं, बल्कि व्यक्ति और समाज का समग्र कल्याण है **(Sharma, 2020)**। एकात्म मानववाद का "समग्र दृष्टिकोण" आज की शिक्षा नीति, सामाजिक योजना और राजनीतिक निर्णयों में नैतिकता एवं मानवता के समावेश की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है **(Kumar, 2019)**।

हालाँकि, इसकी कुछ आलोचनाएँ भी हैं—जैसे धर्माधारित समाज की अवधारणा का अस्पष्ट स्वरूप या आधुनिक लोकतांत्रिक विविधता के साथ इसकी संगति की सीमाएँ **(Chaturvedi, 2017)**। फिर भी, इन आलोचनाओं के बावजूद इसका मूल संदेश अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि यह पश्चिमी भौतिकतावाद के स्थान पर भारतीय अध्यात्मिक मानवीय मूल्यों को केंद्र में रखता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि एकात्म मानववाद केवल एक दार्शनिक विमर्श नहीं, बल्कि एक जीवनदर्शन है जो भारत की सांस्कृतिक चेतना को आधुनिक युग की चुनौतियों से जोड़ता है। यह विचार आज के वैश्विक संदर्भ में मानवता की पुनर्परिभाषा प्रस्तुत करता है और यह सिखाता है कि सच्ची प्रगति तभी संभव है जब मनुष्य अपने भीतर और समाज में संतुलन, करुणा और नैतिकता को पुनः स्थापित करे **(Singh, 2022)**।

संदर्भ सूची

1. Aggarwal, S. (2015). Philosophy of Integral Humanism: Deendayal Upadhyaya's Vision. New Delhi: Concept Publishing.

2. Bhardwaj, A. (2018). "Relevance of Integral Humanism in Modern Indian Society." Indian Journal of Political Thought, 22(3), 45–60.

3. Bhattacharya, S. (2019). Deendayal Upadhyaya: Political Philosophy and Indian Culture. Kolkata: Ananda Books.

4. Chaturvedi, R. (2017). "Integral Humanism and the Indian Way of Life." Philosophy Today, 14(2), 112–127.

5. Das, M. (2019). **दीनदयाल उपाध्याय और भारतीय संस्कृति का मानवतावादी स्वरूप. वाराणसी: भारत विद्या परिषद्।**

6. Dubey, R. K. (2020). **भारतीय चिंतन परंपरा और एकात्म मानववाद. लखनऊ: विश्वविद्यालय प्रकाशन।**

7. Dwivedi, S. P. (2016). "Integral Humanism: A Philosophical Critique." Journal of Indian Studies, 10(1), 88–103.

8. Goyal, B. R. (2014). **भारतीय राजनीति के विचारक: एकात्म मानववाद का दर्शन. नई दिल्ली: अवध प्रकाशन।**

9. Jha, N. (2020). Deendayal Upadhyaya's Integral Humanism and Indian Political Thought. New Delhi: Sage Publications.

10. Joshi, M. (2015). "Cultural Roots of Integral Humanism." Cultural Vision Journal, 5(4), 65–78.

11. Mishra, S. (2017). **एकात्म मानववाद और आधुनिकता की चुनौती. भोपाल: संवाद प्रकाशन।**

12. Nandan, V. (2016). "**एकात्म मानववाद: भारतीय चिंतन की समग्र दृष्टि.**" **भारतीय सामाजिक चिंतन पत्रिका**, 12(2), 45–58**।**

13. Pandey, A. (2021). "Revisiting Integral Humanism: A Socio-Cultural Perspective." Indian Journal of Human Values, 19(1), 25–41.

14. Pathak, D. (2018). Integral Humanism and Development: A Comparative Study. Jaipur: Rawat Publications.

15. Roy, M. N. (1953). New Humanism: A Manifesto. Delhi: Ajanta Publications.

16. Saini, R. (2022). **दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद और भारतीय सामाजिक संरचना. दिल्ली: ज्ञानदीप प्रकाशन।**

17. Saxena, P. (2020). "One World, One Humanity: Relevance of Integral Humanism." Journal of Indian Philosophy and Culture, 7(3), 91–105.

18. Sharma, S. P. (2020). **समकालीन भारत में दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद. जयपुर: साहित्य भवन।**

19. Singh, R. K. (2018). "**एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता: भारतीय लोकतंत्र के परिप्रेक्ष्य में.**" **समाज और संस्कृति पत्रिका**, 8(1), 72–81**।**

20. Srivastava, R. (2019). Deendayal Upadhyaya: The Man and His Philosophy. New Delhi: Mittal Publications.

21. Tiwari, S. (2017). Integral Humanism: An Indian Contribution to Political Philosophy. Pune: Bharatiya Vichar Sadhna.

22. Tripathi, R. (2021). Integral Humanism: Relevance in the 21st Century. New Delhi: Concept Publishing Company.

23. Upadhyaya, D. (1965). Integral Humanism. New Delhi: Bharatiya Jana Sangh Publications.

24. Verma, A. (2022). "**एकात्म मानववाद का दार्शनिक आधार और समकालीन संदर्भ.**" **भारतीय दर्शन समीक्षा**, 15(3), 101–113**।**

25. Yadav, K. (2023). Reconstructing Humanism through Indian Culture: A Study of Deendayal Upadhyaya's Thought. Varanasi: Aryavarta Publications.

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, conclusions, and opinions expressed in articles published in this journal are exclusively those of the individual author(s) and contributor(s). The publisher and/or editorial team neither endorse nor necessarily share these viewpoints. The publisher and/or editors assume no responsibility or liability for any damage, harm, loss, or injury, whether personal or otherwise, that might occur from the use, interpretation, or reliance upon the information, methods, instructions, or products discussed in the journal's content.

****